गुरूनानक जयन्ती कार्तिक पूर्णिमा

परम पवित्र ननकाना साहब

●सुशील सरित

चौदहवीं शताब्दी में भारत की सांस्कृतिक धारा को चिन्तन की जिस सुगन्ध ने सुवासित कर 'शब्द ब्रह्म की सत्ता सर्वोपरि है ' जैसे वेद–घोषित विचार को पुन: जीवनदान दिया उसे सम्पूर्ण विश्व, गुरूनानक के नाम से आज भी नमन करता है।

एक ओर यवनों के लगातार आक्रमणों का दबाव, दूसरी ओर भारतीय चिन्तन एवं जीवनचर्या को पूरी तरह ग्रहण लगा चुकी कुरीतियों से ग्रस्त भारत का मानस और ऊपर अंधविश्वास एवं भेदभाव का गहन अमावसी अंधकार और इन सबसे बढ़कर काबुल से आई मुगल सम्राट बाबर की विजयश्री का उद्घोष, लग रहा था कि सम्पूर्ण भारत की अस्मिता ही टूट कर बिखर जाने की कगार पर है, लेकिन कहते हैं न कि काली से काली रात में भी प्रकाश के बिन्दु कहीं न कहीं जीवित रहते हैं और कब वे बिन्दु सूर्य का रूप धारण कर लेंगे, कहा नहीं जा सकता। ऐसे ही ज्योति पुरुष के रूप में जन्म हुआ, सिख पन्थ के प्रणेता गुरूनानक देव का। **सतगुरूनानक परगटिया मिटी धूंध जग चांदण होया।** मूर्ति पूजा, कर्मकांड एवं तमाम धार्मिक मान्यताओं के विपरीत ''सुविचार ही ईश्वर का सच्चा रूप है।'' जैसे नवीन मूल्यों को स्थापित कर गुरूनानक ने जिस सिख पन्थ की नींव रखी उसे तत्कालीन विचारकों, सन्तों एवं महापुरुषों ने भी मान्यता दी।

इन्हीं प्रथम गुरु नानक देव का जन्म स्थल है 'ननकाना साहेब।'

अविभाजित भारत के लाहौर नगर के दक्षिण–पश्चिम में ८० कि.मी. दूर गुजरानवाला एवं फैसलाबाद (पूर्व नाम लायलपुर) से ७५ कि.मी. दूर स्थित इस नगर को तब अर्थात् १४ वीं शताब्दी में 'तलवंडी' कहा जाता था। पंजाब प्रान्त के केन्द्र में स्थित तलवंडी कस्बा चारों ओर से घने वनों से घिरा हुआ था। लोक मान्यता के अनुसार मूल रूप से इसे हिन्दू राजा बैराट ने बसाया था जो बाद में अग्निकांड एवं हल्के भूकम्पीय झटकों से उजड़ सा गया। बाद में राय भोई ने अपने पुत्र के साथ तलबंडी की रक्षा की और वहाँ अमन चैन कायम किया उसने एक दुर्ग का निर्माण कराया और हजारों एकड़ उपजाऊ भूमि का समुचित उपयोग किया। उसके सुशासन के कारण उस नगर को 'राय भोई दी तलवंडी' कहा जाने लगा।

राय भोई के देहावसान के बाद उसके पुत्र राय बुलर ने गद्दी सम्हाली। राय बुलर शान्त स्वभाव, गरिमामय व्यक्तित्व एवं चिन्तन समृद्ध व्यक्ति था। इस कारण उसके शासन काल में नगर ने न केवल विकास किया वरन वहां पूर्ण सौहार्द एवं शांन्ति का